शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

पत्रकारिता में महात्मा गांधी की भूमिका का अध्ययन

निरंजन कुमार, चन्द्रशेखर कुमार (शोधार्थी)
पत्रकारिता एवं जनसंचार अध्ययनशाला
देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,
इन्दौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'पत्रकारिता में महात्मा गांधी की भूमिका का अध्ययन' में यह कहा जा सकता है कि वर्तमान में पत्रकार के रूप में महात्मा गांधी को बहुत कम लोग जानते हैं। भारत युवाओं का देश है। महात्मा गांधी को इन्दौर के 80 प्रतिशत युवा, पत्रकार के रूप में नहीं जानते हैं। गाधी जी की पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ सामाजिक बिन्दुओं पर भी केन्द्रित थी। गांधी जी की पत्रकारिता सत्ता के विरूद्ध थी। महात्मा गांधी के समय की पत्रकारिता और आज की पत्रकारिता में काफी बदलाव आया है। वर्तमान समय की पत्रकारिता महात्मा गांधी के दौर की पत्रकारिता को काफी पीछे छोड़ दिया है।

शोध परिणाम के अनुसार महात्मा गांधी के द्वारा संपादित किए गए महत्वपूर्ण पत्रों में हरजिन, यंग इंडिया,नवजीवन और इंडियन ओपिनियन के बारे में ज्यादातर लोगों को जानकारी नहीं है। कई पत्रकारों ने शोध विषय पर बात करते हुए कहा कि आज गांधी जी की पत्रकारिता नहीं चल सकती। पेट भरने के लिए कुछ तो करना ही होगा। पत्रकारिता से इतना पैसा नहीं मिलता है कि जीवन यापन हो सके। आज की पत्रकारिता मिशन से प्रोफेशन बन गया है।

प्रस्तावना

महात्मा गांधी बीसवीं सदी के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति हैं, जिनकी अप्रत्यक्ष उपस्थिति उनकी मृत्यु के 67 वर्ष बाद भी देश ही नहीं दुनिया पर देखी जा सकती है। उन्होंने 'हिन्द स्वराज' और 'मेरे सपनों का भारत' में एक उच्च विचारों वाले भारत की कल्पना की और उसके लिए कठिन संघर्ष किया। स्वाधीनता से उनका अर्थ केवल ब्रिटिश राज से मुक्ति का नहीं था बल्कि वह गरीबी, निरक्षरता और अस्पृश्यता जैसी बुराइयों से मुक्ति का सपना देखते थे। वह चाहते थे कि देश के सारे नागरिक समान रूप से आजादी और समृद्धि का सुख पा सकें।

उनके बहुत-से परिवर्तनकारी विचार, जिन्हें उस समय, असंभव कह परे कर दिया गया था, आज न केवल स्वीकार किये जा रहे हैं बल्कि अपनाए भी जा रहे हैं। आज की पीढ़ी के सामने यह स्पष्ट हो रहा है कि गाँधीजी के विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने उस समय थे। यह तथ्य है कि गाँधीगिरी आज के समय का मंत्र बन गया है। यह सिद्ध करता है कि गाँधीजी के विचार इक्कीसवीं सदी के लिए भी और भी अधिक सार्थक और उपयोगी हैं।

महात्मा गांधी ने पत्रकारिता की शुरुआत डरबन में संपादक के नाम पत्र लिखकर की थी। यह पत्र उन्होंने तब लिखा जब उनसे कोर्ट में पगड़ी

उतारने को कहा गया था और उन्होंने ऐसा करने से इंकार कर दिया था। यह महात्मा गांधी नहीं बल्कि भारत की प्रतिष्ठा की बात थी। विरोध के साथ शुरू हुई पत्रकारिता बाद में नवजीवन, इंडियन ओपिनियन, हरिजन के प्रकाशन और कई अखबारों में लेख लिखने के साथ बढ़ती गयी। गांधी जी दूरदर्शी थे, इसलिए वे पत्रकारिता का महत्व जानते थे। वे उस युग के थे जब टीवी और रेडियो तो नहीं ही थे और अखबार भी नाम मात्र के हुआ करते थे।

1903 में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में इण्डियन ओपीनियन का प्रकाशन शुरू करवाया। यह अखबार चार भाषाओं हिन्दी, अंग्रेजी,तमिल और गुजराती में छपता था। गांधी जी एक सजग पत्रकार थे। उन्होंने 'यंग इण्डिया' और हरिजन' के अलावा नवजीवन, 'क्रानिकल' आदि में लिखा।

गांधी जी लिखते हैं, 'भारत की हर चीज मुझे आकर्षित करती है। सर्वोच्च आकांक्षायें रखने वाले किसी व्यक्ति को अपने विकास के लिए जो कुछ चाहिये, वह सब उसे भारत में मिल सकता है। भारत अपने मूल स्वरूप में कर्मभूमि है, भोगभूमि नहीं। भारत दुनिया के उन इने-गिने देशों में से है, जिन्होंने अपनी अधिकांश पुरानी संस्थाओं को, कायम रखा है। साथ ही वह अभी तक अन्धविश्वास और भूल-भ्रान्तियों की इस काई को दूर करने की और इस तरह अपना शुद्ध रूप प्रकट करने की अपनी सहज क्षमता भी प्रकट करता है। उसके लाखों-करोड़ों निवासियों के सामने जो आर्थिक कठिनाइयाँ खड़ी है, उन्हें सुलझा सकने की उनकी योग्यता में मेरा विश्वास इतना उज्ज्वल कभी नहीं रहा जितना आज है।

गांधीजी की नजर में पत्रकारिता और पत्रकार के कर्तव्य

महात्मा गाँधी ने पत्रकारिता के सिद्धांत और पत्रकार के कर्तव्यों के बारे में भी लिखा। वे लिखते हैं,

''मैं महसूस करता हूं कि पत्रकारिता का केवल एक ही ध्येय होता है और वह है सेवा। समाचार पत्र की पत्रकारिता बहुत क्षमतावान है, लेकिन यह उस पानी के समान है जो बांध के टूटने पर समस्त देश को अपनी चपेट में ले लेता है और समस्त फसल को नष्ट कर देता है।'' (सत्य के प्रयोग आत्मकथा)

महात्मा गांधी द्वारा संपादित महत्वपूर्ण पत्र

पत्रकारिता जगत में महात्मा गांधी की पत्रकारिता की भूमिका के बारे में जितना लिखा जाय उतना कम होगा। कहा जाय तो यह गलत नहीं होगा की महात्मा गांधी की पत्रकारिता भारत ही नहीं विश्व के लिए भी पत्थर की लकीर की तरह साबित हुआ है। रंगभेद,जातिभेद, समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास, पुर्वानुमान लगाने और स्वतंत्रता आंदोलन जैसी मजबूत कडी को जन-जन तक पहुंचाने में महात्मा गांधी की पत्रकारिता का अतुलनीय योगदान रहा है। महात्मा गांधी और पत्रकारिता एक-दूसरे के सहायक थे। यह कहना गलत नहीं होगा कि महात्मा गांधी ने समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए पत्रकारिता का सहारा लिया और पत्रकाति ने महात्मा गांधी जैसे लेखकों का सहारा।

गांधी जी की नजर में स्वराज्य का अर्थ

स्वराज्य एक पवित्र शब्द है। वैदिक शब्द है, जिसका अर्थ आत्म-शासन और आत्म-संयम है।

अंग्रेजी शब्द 'इंडिपेंन्स' अक्सर सब प्रकार की मर्यादाओं से मुक्त निरंकुश आजादी का या स्वच्छंदता का अर्थ देता है। वह अर्थ स्वराज्य शब्द में नहीं है। "स्वराज्य से मेरा अभिप्राय है लोक-सम्मति के अनुसार होने वाला भारतवर्ष का शासन। लोक-सम्मति का निश्चय देश के बालिग लोगों को बड़ी-से-बड़ी तादाद के मत के जरिये हो, फिर वे चाहे स्त्रियाँ हों या पुरुष, इसी देश के हों या इस देश में आकर बस गये हों जिन्होंने अपने शारीरिक श्रम के द्वारा राज्य की कुछ सेवा की हो और जिन्होंने मतदाताओं की सूची में अपना नाम लिखवा लिया हो। सच्चा स्वराज्य थोड़े लोगों के द्वारा सत्ता कर लेने से नहीं बल्कि जब सत्ता का दुरुपयोग होता हो तब सब लोगों के द्वारा उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त करके हासिल किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में स्वराज्य जनता में इस बात का ज्ञान पैदा करके प्राप्त किया जा सकता है कि सत्ता पर कब्जा करने और उसका नियमन करने की क्षमता उसमें है। आखिर स्वराज्य निर्भर करता है हमारी आतंरिक शक्ति पर, बड़ी-से-बड़ी कठिनाइयों से जूझने की हमारी ताकत पर। सच पूछो तो वह स्वराज्य, जिसे पाने के लिए अनवरत प्रयत्न और बचाये रखने के लिए सतत् जागृति नहीं चाहिये, स्वराज्य कहलाने के लायक ही नहीं है।'

जहाज में पुस्तक की रचना

1896 में जब गाँधीजी इंग्लैंड से दक्षिण अफ्रीका जा रहे थे तब जहाज पर 'हिन्द स्वराज' पुस्तक की रचना की। जब बाएँ हाथ से लिखते तो अंग्रेजी और दाएँ हाथ से लिखते तो गुजराती और उर्दू खूबसूरती से लिखा करते थे। लिखने की रफ्तार उनके चलने की रफ्तार से कहीं तेज होती। आवश्यकता पड़ने पर स्वयं टाइप भी कर लिया करते थे। गाँधीजी जो पुस्तक पढ़ते थे, उनसे न केवल वे स्वयं सीखते थे बल्कि दूसरों को भी अच्छाई का संदेश देते थे क्योंकि उन पुस्तकों का निचोड़ वे अपने लेखन में भी देते थे। उनका पुस्तकें पढ़ने का एक उद्देश्य यह भी होता था कि उसको वे अपने संपादकीय लेखन में शामिल करें।

अध्ययन का उद्देश्य

महात्मा गांधी की पत्रकारिता के संबंध में युवा वर्ग की सोच एवं समझ का अध्ययन करना।

गांधी जी की पत्रकारिता के स्वरूप का मूल्यांकन करना।

गांधी जी की पत्रकारिता एवं वर्तमान पत्रकारिता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'पत्रकारिता में महात्मा गांधी की भूमिका का अध्ययन' में शोध हेतु विश्लेषण एवं सैम्पल सर्वे पद्धति का सहयोग लिया गया है। तथ्य संकलन हेतु इन्दौर के 100 लोगों का चयन किया गया। जिनकी उम्र 20 साल से ऊपर थी। निम्नतम शैक्षिणक योग्यता स्नातक रखी गयी है, ताकि यह विश्लेषित किया जा सके कि महात्मा गांधी की पत्रकारिता के बारे में लोगों की राय क्या है ? कितने लोग महात्मा गांधी की पत्रकारिता से अवगत हैं।

शोध को आकार प्रदान करने के लिए समाचार-पत्र लेख, रिपोर्ट, पूर्व अध्ययन,पुस्तकें शोध पत्रिका एवं विभिन्न समसामयिक पत्र-पत्रिकाओं का सहयोग लेते हुए शोध स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया गया है।

तथ्य विश्लेषण एवं आंकड़ो का प्रस्तुतीकरण

शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 अप्रैल 2014

1 क्या आप महात्मा गांधी की पत्रकारिता के बारे में जानते हैं ?

हाँ	नहीं
80%	20%

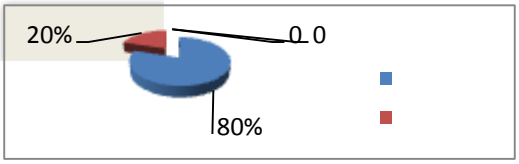

इस प्रश्न के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि वर्तमान में महात्मा गांधी की पत्रकारिता से कितने युवा अवगत हैं। इसके संदर्भ में 80% युवाओं का मानना है कि वे गांधीजी की पत्रकारिता से अवगत हैं वहीं 20% युवाओं का मानना है कि वे गांधीजी की पत्रकारिता से अवगत नहीं हैं।

गांधीजी की पत्रकारिता स्वतन्त्रता संग्राम पर आधारित थी	सामाजिक बिन्दुओं पर ज्यादा केन्द्रित थी	अ और ब दोनों	उस समय सिर्फ विज्ञापन छपता था
15%	20%	65%	00%

2. अगर जानते हैं तो आपकी नजर में किस प्रकार से गांधी जी की पत्रकारिता वर्तमान समय की पत्रकारिता से भिन्न थी ?

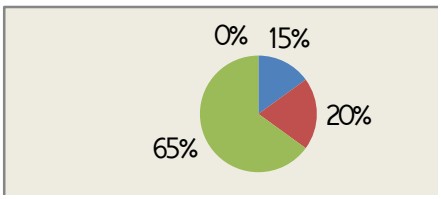

अगर जानते हैं तो आपके नजर में किस प्रकार से गांधी जी की पत्रकारिता वर्तमान समय की पत्रकारिता से भिन्न थी ? के संदर्भ में सबसे ज्यादा 65% युवाओं ने माना कि गांधीजी की पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित और सामाजिक बिन्दुओं पर ज्यादा केन्द्रित थी। उस समय समाचार-पत्रों में सिर्फ विज्ञापन छपने की बात को सभी ने नकार दिया है।

3.वर्तमान समय की पत्रकारिता गांधी जी की पत्रकारिता से भिन्न है ?

हाँ	नहीं	कह नहीं सकते
55%	5%	40%

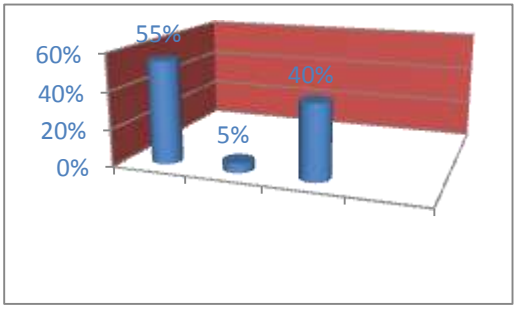

इस प्रश्न के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया कि वर्तमान की पत्रकारिता गांधी जी की पत्रकारिता से भिन्न है के संदर्भ में 55% युवाओं ने कहा हां, 5% युवाओं ने कहा वर्तमान समय की पत्रकारिता गांधी जी की पत्रकारिता से भिन्न नहीं है और 40% युवाओं ने कहा कि इस प्रश्न में हम कुछ कह नहीं सकते हैं।

4. आज की पत्रकारिता ने गांधीजी के सपनों को समाप्त कर दिया ?

सहमत हैं	असहमत हैं	कह नहीं सकते
60%	5%	35%

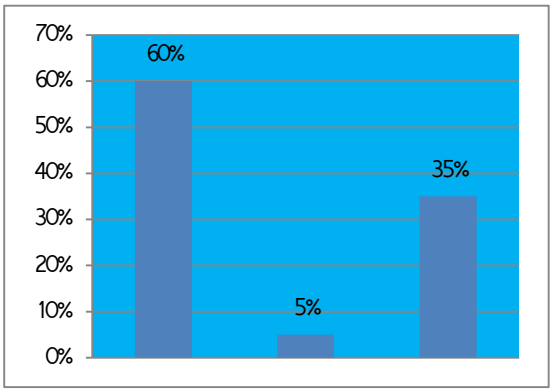

इस प्रश्न के संदर्भ में 60% युवाओं का मत है कि आज की पत्रकारिता ने गांधीजी के सपनों को समाप्त कर दिया है, वहीं 5% युवा इस कथन से असहमत हैं, जबकि युवाओं का मानना है कि हम इस बारे में कुछ कह नहीं सकते हैं।

5. आपकी नजर में वर्तमान समय की पत्रकारिता .....है ?

व्यापार हो गयी है	सामाजिक बिन्दुओं से हट गयी है	व्यक्तिगत हो गयी है	उपर्युक्त सभी
30%	15%	55%	00%

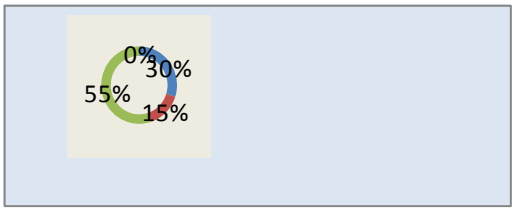

आपकी नजर में वर्तमान समय की पत्रकारिता के सवाल में 55% सबसे ज्यादा लोगों का मानना है कि वर्तमान समय की पत्रकारिता व्यक्तिगत हो गई है, 30% लोगों का मानना है कि पत्रकारिता व्यापार हो गई है, 15% लोगों का मत है कि पत्रकारिता सामाजिक बिन्दुओं से हट गई है, उपर्युक्त सभी के पक्ष में कोई मत नहीं है।

6. गांधीजी द्वारा संपादित किए गए पत्रों में आप सबसे अच्छा किसे मानते हैं ?

हरिजन	यंग इंडिया	नवजीवन	इंडियन ओपिनयन
10%	75%	10%	5%

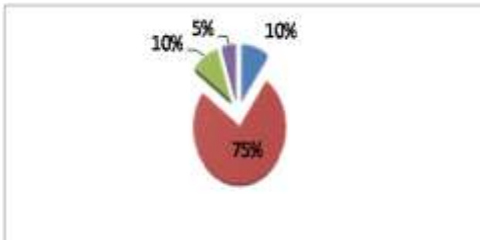

गांधीजी के द्वारा संपादित किए गए पत्रों में आप सबसे अच्छा किसे मानते हैं के संदर्भ में सबसे ज्यादा 75% यंग इंडिया को मिले हैं, उसके बाद क्रमशः हरजिन 10% ,नवजीवन 10% और इंडियन ओपिनियन को 5% मत मिले हैं।

7. आज की पत्रकारिता में गांधीजी की पत्रकारिता का कोई स्वरूप नहीं है क्योंकि?

अब आजादी जैसा कोई मिशन नहीं है	सामाजिक सरोकारों से ज्यादा अर्थ को महत्त्व दिया जा रहा है	पहले की तुलना में पत्रकारिता में लागत ज्यादा है	सभी लागू होते हैं
00%	60%	10%	30%

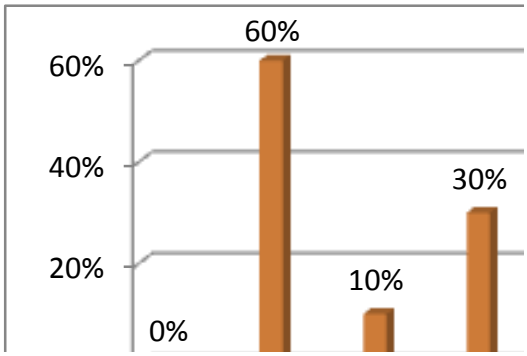

आज की पत्रकारिता में गांधीजी की पत्रकारिता का कोई स्वरूप नहीं है क्योंकि के संदर्भ में सामाजिक सरोकार से ज्यदा अर्थ को महत्व दिया जा रहा है को सबसे ज्यादा 60% मत, पहले की तुलना में पत्रकारिता में लागत ज्यादा है को 10% मत, उपर्युक्त सभी लागू होते हैं को 30% मत और अब आजादी जैसा कोई मिशन नहीं है को कोई मत नहीं मिला है।

8. महात्मा गांधी की पत्रकारिता ने समाज को दिशा देने का काम किया है क्योंकि ?

गांधी ही बहुत बड़े लेखक थे	उनकी लेखनी में दूरदर्शिता थी	बहुत बड़े नेता थे	साधारण व्यक्ति थे
00%	60%	00%	40%

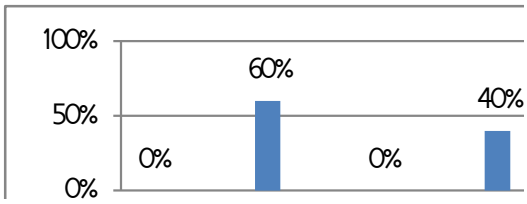

महात्मा गांधी की पत्रकारिता ने समाज को दिशा देने का काम किया है क्योंकि ? के संदर्भ में 60%लोगों का मानना है कि उनकी लेखनी में दूरदर्शीता दिखती थी, 40% लोगों का मानना है कि गांधी जी बहुत ही साधारण व्यक्ति थे। गांधी जी बहुत बडे लेखक थे और बहुत बड़े नेता थे के संदर्भ में कोई मत नहीं मिला है।

9. महात्मा गांधी की पत्रकारिता में निष्पक्ष, संयम और पवित्रता वाली लेखनी थी?

सहमत हैं	असहमत हैं	पता नहीं
65%	5%	30%

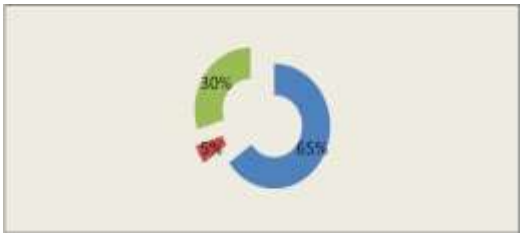

प्रश्न - महात्मा गांधी की पत्रकारिता में निष्पक्ष, संयम और पवित्रता वाली लेखनी थी ? के संदर्भ में सबसे ज्यादा 65% लोगों का मानना है कि वे इस कथन से सहमत हैं, 5% लोगों का मानना है कि वे इस कथन से असहमत हैं वहीं 30% लोगों ने कहा कि इस प्रश्न के उत्तर बारे में कुछ पता नहीं।

10. गांधीजी की पत्रकारिता को सत्य की प्रयोग की पत्रकारिता कही जाती है ?

सहमत हैं	असहमत हैं	थोड़ा बहुत सहमत	पता नहीं
45%	10%	30%	15%

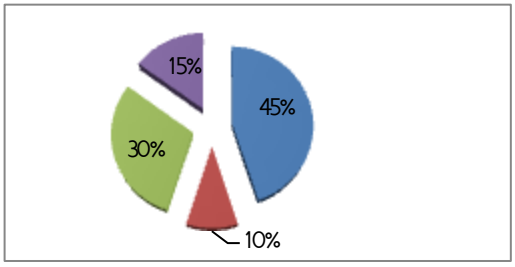

प्रश्न - गांधीजी की पत्रकारिता सत्य की प्रयोग की पत्रकारिता कही जाती है ? के संदर्भ में 45% लोग इस कथन से सहमत हैं, 10% लोग असहमत हैं, 30% लोग थोड़ा बहुत सहमत हैं वहीं 15% लोगों का कथन है कि इस बारे में कुछ कह नहीं सकते।

11. क्या वर्तमान समय की पत्रकारिता से आम-जन का विश्वास उठता जा रहा है ?

हाँ	नहीं	थोड़ा बहुत	कुछ कह नहीं सकते
35%	10%	50%	5%

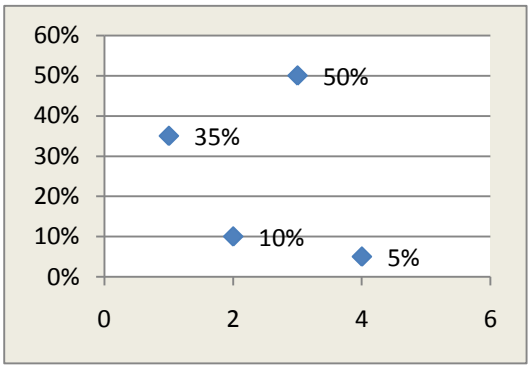

प्रश्न के संदर्भ में 35% लोगों का मत हां है, 10% लोगों का मत नहीं है, 50% लोगों का मत थोड़ा बहुत है वहीं 50% लोगों ने कहा हम कुछ कह नहीं सकते हैं।

12. क्या 21वीं सदी में पत्रकारिता का रंग पूरी तरह से व्यवयायिक हो गया है ?

हाँ	नहीं	थोड़ा बहुत	कुछ कह नहीं सकते
35%	00%	60%	5%

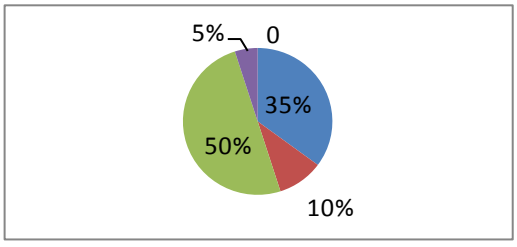

प्रश्न - क्या 21वीं सदी में पत्रकारिता का रंग पूरी तरह से व्यावसायिक हो गया है ? के संदर्भ में 35% लोगों ने कहा है कि हां 21वीं सदी में पत्रकारिता का रंग पूरी तरह से व्यावयायिक हो गया है। नही के पक्ष में कोई मत नहीं है। 60% लोगों ने कहा है कि थोड़ा बहुत पत्रकारिता का रंग पूरी तरह से व्यावसायिक हो गया है वहीं 5% लोगों ने कहा है कि हम इस प्रश्न में कुछ कह नहीं सकते।

शोध निष्कर्ष

प्रश्नावली तथ्य संकलन एवं विश्लेषण के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि आजादी के 67 साल के बाद युवाओं में महात्मा गांधी की पत्रकारिता को लेकर ज्यादा उत्साह नहीं है। महात्मा गांधी की पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ देश को दश एवं दिशा एवं बदलने का काम किया। गांधीजी के द्वारा संपादित पत्रों में 75% लोग मुख पत्र के रूप में यंग इंडिया को मानते हैं। कुछ लोगों ने वर्तमान समय की पत्रकारिता को सामाजिकता से ज्यादा अर्थ को ज्यादा महत्व देना बताया है। इससे यह साफ हो जाता है कि वर्तमान समय की पत्रकारिता सत्य के प्रयोग से दूर अर्थ की पत्रकारिता की ओर केन्द्रित हो रही है। जिसका उद्देश्य सिर्फ और सिर्फ मुनाफा कमाना है। मुनाफा कमाने के दौर में गांधीजी का सत्य प्रयोग और उनका सपना शायद रूमानी ख्यालों में खोता जा रहा है। देश की बदलती तस्वीर ने गांधीजी के सपनों और पत्रकारिता को बदल दिया है।

तथ्य संकलन के लिए 20 साल से ऊपर के युवाओं से भरवाई गयी प्रश्नावली में प्रश्न - क्या आप महात्मा गांधी की पत्रकारिता के बारे में जानते हैं ? के संदर्भ में 80% युवाओं ने कहा कि वह महात्मा गांधी की पत्रकारिता से अवगत हैं। कई युवाओं ने कहा कि महात्मा गांधी की पत्रकारिता सत्य का प्रयोग है। इसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है। महात्मा गांधी की पत्रकारिता

में निष्पक्ष, संयम और पवित्रता वाली लेखनी थी। इस प्रश्न के उत्तर में 65% लोगों ने अपनी सहमति जाहिर की। प्रश्न - अगर जानते हैं तो आपकी नजर में किस प्रकार से गांधी जी की पत्रकारिता वर्तमान समय की पत्रकारिता से भिन्न थी ? इस प्रश्न के संदर्भ में 65% युवाओं ने अ और ब दोनों पर उत्तर दिये हैं, जिसका उत्तर है गांधीजी की पत्रकारिता स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित थी और सामाजिक बिन्दुओं पर ज्यादा केन्द्रित थी। वहीं वर्तमान पत्रकारिता की बात करने पर प्रश्न - क्या वर्तमान समय की पत्रकारिता से आम-जन का विश्वास उठता जा रहा है ? के संदर्भ में 50% युवाओं ने कहा कि थोड़ा बहुत आज की पत्रकारिता से विश्वास उठता जा रहा है, 35% युवाओं ने कहा कि हां वर्तमान समय की पत्रकारिता से पूरी तरह से विश्वास उठता जा रहा है। प्रश्न - आज की पत्रकारिता ने गांधीजी के सपनों को समाप्त कर दिया ? इस प्रश्न के संदर्भ में 60% युवाओं ने कहा है कि हां आज की पत्रकारिता ने गांधीजी के सपनों को समाप्त कर दिया है। आपकी नजर में वर्तमान समय की पत्रकारिता क्या है के संदर्भ में 55% लोगों ने कहा है कि पत्रकारिता व्यक्तिगत हो गई है, 30% लोगों ने कहा कि पत्रकारिता व्यापार हो गई है वहीं 15% लोगों का मानना है कि आज की पत्रकारिता सामाजिक बन्दुओं से हट गई है।

सुझाव:

प्रस्तुत शोध अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव इस प्रकार हैं-

गांधी जी और उनकी पत्रकारिता से लोगों को अवगत कराने के लिए गांधी जी की पत्रकारिता पाठ्यक्रम में लागू किया जाए।

वर्षों से पत्रकारिता कर रहे पत्रकारों को जागरूक करने के लिए गांधीजी की पत्रकारिता से अवगत कराएं। जिससे अन्य पत्रकारों में भी गांधीजी की पत्रकारिता को लेकर विश्वास बना रहे।

पत्रकारिता के बदलते परिवेश में गांधीजी की पत्रकारिता हमेशा एक पत्रकार को सत्य की राह पर चलना सिखलाएगी। इसलिए पत्रकारिता को सत्य के करीब लाने का प्रयास करें।

गांधीजी की पत्रकारिता को आदर्श बनाने के लिए कार्यशाला का आयोजन करें। जिससे प्रत्यक्ष रूप से व्यावहारिक और सेद्धान्तिक दोनों वर्गों को लाभ मिलेगा।

संदर्भ ग्रन्थ

1 महात्मा और कवि - सव्यसाची भट्टाचार्य, प्रकाशक - नेशनल बुक ट्रस्ट,इंडिया, आईएसबीएन-81-237-4525-7.

2 मेरे सपनों का भारत - महात्मा गाँधी, प्रकाशक - राजपाल प्रकाशन, आईएसबीएन-81-7028-739-1.

3 सत्य के प्रयोग - महात्मा गाँधी, प्रकाशक - राजपाल एंड सन्स, आईएसबीएन-978-81-7028-728.

4 सुनों विद्यार्थियों - महात्मा गाँधी, प्रकाशक - प्रभात प्रकाशन, आईएसबीएन-81-88-267-86-4.

5 हिन्द स्वराज - गांधी जी अनुवाद अमृतलाल ठाकुरदास नाणावटी- नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद 14 - पहली आवृत्ति 1949.

6 ग्राम स्वराज- महात्मा गांधी - संग्राहक हरिप्रसाद व्यास- नवजीवन प्रकाशन मंदिर अहमदाबाद-14 -न्यू जीवन ट्रस्ट 1963.

सहायक संदर्भ

http://mediakhabar.com/journalism/

http://samvadsetupatrika.wordpress.com/tag/%E0

http://hindi.webdunia.com/miscellaneous/special09/gandhijayanti/0910/01/109100108_1.htm

फोटो सन्दर्भ

http://www.google.co.in/imgres?imgurl=http://upload.wikimedia.org/wikipediahttp://ww.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fwww.mkgandhi.org%2Fimages%2FNavjivan.
http://www.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fupload.wikimedia.org
http://www.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fwww.readex.com
http://www.google.co.in/imgres?imgurl=http%3A%2F%2Fsonekichidiya.in%2Fwp-